International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.328
Vol.9 No.2 Nov – Dec 2021

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के उपन्यासों में वास्तविकता का बोध

डॉ. भीमसिंग के राठोड

हिंदी सह अध्यापक, सरकारी माध्यमिक शाला, के एस आर पी, कलबुरगि. कर्नाटक

प्रस्तुत शोधपत्र में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के उपन्यासों में सामाजिक चेतना का अध्ययन किया गया है। क्रांतिधर्मी निराला केवल उपनाम से ही निराले नहीं थे, वरन् उनका व्यक्तित्व उन्हें निराला बनाता है। वे प्रगतिवादी चेतना के श्रेष्ठ कवि रहे हैं। उनकी उपन्यासों में कविताओं की तरह मध्यवर्ग और उसकी चेतना की अभिव्यक्ति मिलती है। उन्होंने समाज के साधारण पात्रों और उनके छोटे-छोटे दुःखों और अभिशप्त जीवन जीने की विवशता को अभिव्यक्ति दी है। निराला की भाषा भी यही है, जो समाज में बोली जाती है। निराला के उपन्यासों की कथावस्तु के साथ-साथ उसकी परिस्थितियों, परिवेश, भाषा, पात्र और सुख-दुःख से ही हैं, जो समाज जीता है। विसंगतियों का चित्रण निराला की विशेषता है। सच तो यह है कि निराला का कोई याद नहीं था, किन्तु आलोचक उन्हें अपनी अपनी तरह से तमाम साहित्यिक वादों से जोड़ते हैं। उन्हें कोई प्रगतिशील, कोई प्रगतिवादी, कोई जनवादी मानता है। किन्तु वे प्रतिबद्ध जनचेतना के कवि और कथाकार रहे हैं।

प्रस्तावना :

कोई भी साहित्यकार एक निश्चित समय-विशेष में रचना करते हुए तत्कालीन के साथ साथ अतीत एवं अनागत भविष्य को समेटते हुए चलता है। इस प्रक्रिया में जो साहित्यकार जितना निष्णात होता है, वह उतना ही प्रभावशाली एवं कालजयी रचनाकार बन पाता है। तीनों कालों को समेटने की क्षमता प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकारों में ही होती है। अतीत की जीवन्त परम्परा से प्रेरणा ग्रहण करते हुए, वर्तमान की जटिलताओं से संघर्ष करते हुए, मंगलमय भविष्य की कल्पना ही साहित्यकार का प्रधान लक्ष्य होता है। इस दिशा में बुगीन परिस्थितियों, परिवेश एवं सजग जीवन दृष्टि महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं।

जो स्थान भक्ति साहित्य में तुलसीदास का है, वही स्थान छायावाद में 'निराला' का है। कहना न होगा कि भक्तिकाल में रहकर भी तुलसीदास ने जिस प्रकार उसका अतिक्रमण किया है, उसी प्रकार 'निराला' भी छायावाद का अतिक्रमण कर परवर्ती साहित्य के भी प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। निराला उन साहित्यकारों में हैं जिनकी रचनाओं में जातीय चेतना की धरोहर सुरक्षित है। डॉ० रामविलास शर्मा का यह कथन कि "उनका अपना जीवन संघर्ष देश की जनता के संघर्ष से घुल मिलकर एक हो गया है। वह उनके साहित्य की ऊर्जा का मुख्य स्रोत है। "उनका साहित्य संघर्ष का पर्याय है। यह संघर्ष मनुष्य की मुक्ति का संघर्ष है। किसी धर्म, जाति, वर्ण या देश विशेष का मनुष्य नहीं, उन्हीं के शब्दों में समस्त विश्व के मनुष्य हमारी मनुष्यता के दायरे में "आ जायें' यही उनका प्रयास रहा है।

जिस प्रकार काव्य में उन्हें इस मनुष्य की तलाश है उसी प्रकार कथा साहित्य में भी। निराला ने उपन्यास के स्वरूप एवं प्रगति पर कहीं स्वतंत्र रूप में तो कहीं चलते चलाते विचार व्यक्त किया है। उन्हें जिस प्रकार साहित्य में 'प्राचीन रूढ़िवाद' 'अन्धपरम्परा' को देखकर दुख हो रहा था, उसी प्रकार उपन्यास साहित्य में भी 'सूनापन' दीख पड़ा है। 'उपन्यास साहित्य और 'समाज' में वे कहते हैं "उपन्यास वास्तविक जीवन के चित्र रखता है। साथ साथ जहाँ जीवन दागी होकर संजीवनी शक्ति से रहित हो जाता है, वहाँ उसे नयी प्रथा से संवारकर या प्रहार द्वारा नष्ट करके औपन्यासिक नवीन चित्रण का समावेश करता है।"

यहीं पर प्रेमचन्द का आदर्शवाद उन्हें पसन्द नहीं था। वे इस आदर्शवाद के साथ यथार्थवाद की तलाश में थे। सामाजिक विसंगतियों के साथ तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों पर उनकी महत्वपूर्ण टिप्पणी है "राजनीतिक मैदान में जिस तरह बड़ी बड़ी लड़ाइयों के लिये सिर उठाना आवश्यक है, उसी तरह साहित्य के मैदान में भी है, और चूंकि अभी इस लड़ाई के, हमारे साहित्य में, कहीं भी दृश्य नहीं देख पड़ते, इसलिये साहित्य के मुख चित्रण अंग उपन्यासों की यह दुर्दशा है।"

'आज अमीरों की हवेली होगी गरीबों की पाठशाला' के आकांक्षी कवि निराला के कथा साहित्य में युग का यही यथार्थ प्रतिविम्बित है।

सजग एवं संवेदनशील रचनाकार अपने युग से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। युग विशेष की परिस्थितियाँ उसकी अनुभूति को धारदार बनाती है। यह अपने युग का सच्चा प्रतिनिधि तभी कहा जा सकता है, जब उसने अपनी युगीन स्थितियों को जागरूक रचनाकार की भाँति न केवल देखा-परखा हो, वरन् उस काल की समस्याओं को भी चित्रित किया हो, उन समस्याओं के समाधान का दिशा-निर्देश भी किया हो। अभिव्यक्ति का यह कौशल उसी साहित्यकार को प्राप्त होता है, जिसमें युग की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिका परिस्थितियों का सूक्ष्म अवलोकन करने की क्षमता हो। संक्षेप में कहें तो वहीं रचनाकार प्रतिष्ठा अर्जित कर पाता है जो युगीन संवेदना का अपनी अभिव्यक्ति के साथ सुसंगत सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ हो।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला अपने उपन्यास साहित्य में जीवन संपाग का ही अकन किया है। निराला रचना को युद्ध कौशल कहते थे और गद्य को जीवन संग्रामका भाषा इन्होंने अपने गद्य साहित्य में और अधिक जातिकारी और विद्रोही रूप में दिखाई देते हैं। उनके कथा साहित्य में बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन से लेकर पूरे राष्ट्रीय और कतिकारी आन्दोलन की झलक मिलती है। वे देशी-विदेशी हर प्रकार के शोषण के विरोधी है। विदेशी के साथ भारतीय सामंत और जमींदार सरकारी कर्मचारी किसान-मजदूरों के लिए के नये-नये तरीके इस्तेमाल करते थे। इस प्रकार निराला इस जनता के साथ दिखाई देते हैं। उनका मानना था कि राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन साथ-साथ होने चाहिए पीडित जनता की राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक मुक्ति की कामना करते हुए मुक्ति का त्रिकोण बनाते है।

रूढ़ियों से है जिन्होंने का किया उन पर आयाचार किए. वही स्त्री के शोषण और उसकी पराधीनता के लिए भी जिम्मेदार है। इस प्रकार स्त्रियों को सामाजिक पराधीनता उन पर किए पाने वाले अत्याचारों का मुख्य कारण उसका आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होना ही है। उनके साथ जो होते हूँ उनका कोई प्रतिकार नहीं होता पानी को पीकर में जाती है। उनका जीवन एक अभि का जीवन बन रहा है। निराला का कहना था कि इस घरेलू दासता का ना होना चाहिए परधीनता के कारण ही समाज में दोहरी नैतिकता का जन्म

होता है। स्त्रियों के लिए एक नियम है तो पुरुषों के लिए एक दूसरा इस यो किता के लिए शास्त्रों के उद्धरण दिये जाते थे धर्म को दुहाई दी जाती थी। धर्म शोषण के नियमों को बनाए रखने का सबसे प्राचीन औजार है

निराला की दृष्टि में लिए नारी, किसान और मजदूर बिना राष्ट्रीय स्वतंत्रता की कामना नहीं की जा सकती है iजबकि देश स्वतंत्रता प्राप्त किए आधी शताब्दी से अधिक समय हो गया है. देश के करोड़ो पीड़ित शोषितो और इस व्यवस्था सरोदे जाने वाले लोगों को कभी कोई उनका उपास साहित्य हमारे लिए आज भी प्रासंगिक और प्रेरक बनकर हम लोगों के बीच खड़ा है। स्त्रियों को भी गुलाम कर दिया गया था। निराला ने स्वयं कहा है की भारतीको मृत्यु तरफ पैर रखा है। अपना सब कुछ भूली हुई है। उनसे प्राचीन गीता अर्थहीन है, निराला ने धर्म और रूढ़ि में असर को कहा है किस प्रणालिया मनुष्यों ने ही समय-समय पर अपनी भलाई के लिए समाज में चलाई है, अपना धर्म, समाज को इस प्रकार तैयार रखना चाहिए कि फौज की सिपाहियों की तरह इच्छानुसार जो जैसी जरूरत पड़े हम समाज को उसी तरह उसी रूप में उसी राह से निकाल सकते हैं इस प्रकार रूढ़ियों की के लिए धर्म की विवृताच्याही रही है के भाग पर किया जा रहा है तथा भारतीयता की दुहाई देकर रूढ़ियों के निर्वाह का आह्वान किया जा रहा है। रूढ़ियों को इस तरह निभाना निराला की दृष्टि में ज्ञान शून्य कर्म था जिसमें समाज की प्रगति तो थी। इन्ही सब कुरीतियों के प्रति निराला नित में जागृति आई थी और अन्य सभी में नीता ने चेतना प्रदान करने के लिए अपने साहित्य में पात्रों का सहारा लिया है। नीता ने अपने उपन्यासों में दीन-हीन एवं निरीह स्त्रियों के प्रति नयनका संचार किया है।

"अलका उपन्यास में अंग्रेजी राज तालुकेदार जमींदार साथ-साथ शिक्षा एवं संगठन के द्वारा किसानों, दलितों की मुक्ति चेतना और उनकी मुठभेड़ का विशद वर्णन मिलता है। इसी प्रकार अपारा उपन्यास में निराला का काल्पनिक आदर्शवाद हावी है। भेदभाव व स्त्री की पराधीनता के विरुद्ध एक चेतना निश्चित ही दिखाई देती है। यहाँ से आरंभ निराला की औपन्यासिक यात्रा में जैसे-जैसे चार्थ समीप आता है वैसे-वैसे यह शोषणविरोधी चेतना अधिक स्पष्ट और प्रखर होकर हमारे सम्मुख आती है। इसी प्रकार निरुपमा में भी जमींदारों के शोषण और अत्याचारों का वर्णन किया गया है। साथ ही ग्रामीण जीवन के जैसा और विश्वसनीय चित्र प्रस्तुत किया गया यह निराला के अन्य उपन्यासों में दुर्लभ है। ग्रामीण स्त्री-पुरुषों में जीता उन पर होने वाले अत्याचारों का यथार्थ निरुपमा में किया गया है।

अतः प्रभावती उस अप्सरा की दी है। इसके प्रेम की परिणति यौवन के मधुर स्वपनों के अनुकूल नहीं होती। पृथ्वीराज और जयचन्द के गृहयुद्ध में यह सारा ऐश्वर्य नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है कालीन समाज में जो सामाजिक उत्पीड़न की आग रही थी उससे यह वैभव अपनी न कर सका। इस प्रकार प्रभावी उपन्यास इतिहास के प्रति एक नया दृष्टिकोण है। कुल्ला में अछूतोद्वार एवं उसमें हारिक कठिनाइयों का चित्रण किया है। दलितों की एक प्रमुख समस्या है। इस समस्या से निपटने के लिए वह संगठन एवं अमृतोद्वार के लिए एक

आन्दोलन आवश्यकता पर बल देती है। दिल्लेसुर बकरिता में निराला की शोषण विरोधी चेतना यहाँ भी है। दृश्य जगह-जगह मौजूद है। निराला का यह बिल्लेसुर एक मामूली किसान है जो जीवन के लिए अथक प्रयास करता है और अन्तत विजयी भी होता है। जाति के ब्रा और कर्मण किसान बिल्लेसुर की सहायता करने वाला कोई नहीं समाज ने उसका कोई विशेष स्थान नहीं फिर भी वह अपने यम की बाधाओं को दूर करता है।

' चमेली ' उपन्यास के नायक-नायिका आदि प्रमुख पात्र प्राय दलित हैं। दलितों के प्रति जमीदारों के उत्पीड़न एवं उनकी बहू-बेटियों के प्रति जमीदार उच्चवर्गीय लोगों की कुदृष्टिको रेखांकित किया गया है। किसी तरह ठाकुर का है इसका भी दिन निराला ने किया है। निर्धन दलितों का तरफादार कोई नहीं है। इस प्रकार चोटी की पकड़ में साम्राज्यवादी अंग्रेजों द्वारा हिन्दू-मुसलमानी दीवार खड़ी करने तथा भारतीय राष्ट्रीय को कमजोर करने के लिए बंगाल विभाजन की योजना बनाई गई के अनेक मूल्यों करने से अर्थात् सीमा थी। अत शोषण की इस प्रक्रिया में देश में विदेशी व्यापारियों करता था। देश में विदेशी यातनियों के कारण अपना गया। हम उन्ही के दिए आंकड़े से अपनी ला देते हैं के आने से मुँह देखते है की आग गई पत्रकार गया वैश्य का व्यापार चौपट हुआ। यह सब को लेना है। के वास्ते हम है यह है निराला के शोषणविरोधी.

अतः निराला के काले कारनामे अपूरा उपन्यास है निराला ने दिखाया है कि जमींदारों का क्रूर आतंक विभिन्नकूटनी आदि के शोषण उत्पीडन और पाशविक अत्याचारों के चित्रण के के ग्रामीण जनता पर अब तक टिका हुआ है और इस सामान्य अधिकार वचित जनता इनके में इनकी पर नाच रही है. वहीं दूसरी ओर मनोहर है, जो जाति-पाति समस्या एवं प्रान्तीयता की समस्या का सामना करता | काशी] | चूहों के लिए संस्कृत पाठशाला खोलता है। इसको उस समय की है जब लार्ड कर्जन ने बंग-भंग किया अंग्रेजों द्वारा हिन्दू-मुसलमानों में दीवार खड़ी करने के लिए जिन की योजना बनाई गई थी। इस प्रकार निकला ने अपने साहित्य में किसानों, दलित शोषित पीडित, निरोत्रियों दयनीय स्थितियों का प्रस्तुत करते हुए नव चेतना प्रदान की है जो अत्यंत विस्मरणीय है।

निष्कर्ष :

निराला का सम्पूर्ण कथा साहित्य उनके समय के वातावरण, परिवेश एवं साहित्यिक सामाजिक परिस्थितियों का प्रामाणिक दस्तावेज है। उनके साहित्य में पराधीन और स्वाधीन भारत की राजनीतिक परिस्थिति का, शोषितों की पीड़ा एवं वेदना का तथा साहित्यिक एवं सामाजिक संघर्षो का मार्मिक चित्रण मिलता है। निराला के कथा-साहित्य के विश्लेषण के लिए तत्कालीन परिस्थितियों का, देशकाल का सम्यक् विवेचन अत्यन्त उपयोगी है। यही कारण है किशोध-प्रबन्ध के आरम्भ में युगीन परिस्थितियों के आकलन का प्रयास किया गया है। सुविधा की दृष्टि से इस अध्ययन को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक उपशीर्षकों में विभक्त किया गया है। इन परिस्थितियों के घात-प्रतिघातों के बीच निराला का जो साहित्यिक व्यक्तित्व निर्मित हुआ, उसके आकलन की भी चेष्टा अध्याय के अन्त में की गयी है।

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला युगद्रष्टा साहित्यकार थे। युगीन विषमताओं का संजीव आकलन उनके साहित्य में हुआ है। उन्होंने अपने युग के भाव बोध को आत्मसात कर उसे साहित्य में चित्रित किया है। उन्होंने जीवन को खुली आंखों देखा, परखा, अनुभव किया एवं तत्पश्चात् साहित्य में उसका चित्रण किया। अतः उनके साहित्य में युग का यथार्थ चित्रित है। साहित्यकार के रूप में निराला की जीवन यात्रा का आरंभ १९९६ ई० से हुआ। शुरू ये कविता लेखन की ओर उन्मुख हुए। किन्तु जीवन-जगत की विसंगतियों को और अधिक व्यापक आधार भूमि प्रदान करने के लिए परवर्ती काल में वे कथा साहित्य की ओर उन्मुख हाए । निराला के सम्पूर्ण रचना संसार में १९९६ से १९६१ तक का कालखंड समाहित है। पराधीन एवं स्वाधीन भारत के विविध चित्र इस समय देखे जा सकते हैं। इस समय को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। (१) स्वतंत्रता काल (२) स्वातंत्र्योत्तर काल। देश में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं

साहित्यिक दृष्टि से विभिन्न परिदृश्य उभर रहे थे। विषय के पूर्ण विवेचन के लिए उनका स्वतंत्र अध्ययन आवश्यक है।

सन्दर्भ :

1. साहित्यलोचन : इडियन प्रेस लिमिटेड : डा श्यामासुन्दर दास
2. निराला के काव्य प्रतिमान : शशिप्रभा सिन्हा
3. निराला की काव्य साधना :वीणा शर्मा
4. काव्य का देवता niral: विश्वम्भर मानव
5. निराला का साहित्य और साधना : डॉ विश्वम्भरनाथ प्रसाद
6. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला : श्यामासुन्दर दास घोष